ॐ अथ गायत्री मन्त्रः ॐ

Gayatri Mantra

प्रियवरो इस नश्वर संसार में हरेक व्यक्ति यह चाहता है कि वो सुखी हो जाए, लेकिन वो सुख की प्राप्ति कैसे होगी वो साधन हम भूल चुके हैं। हम सुखों को इस संसार से पाना चाहते हैं जिस संसार के पास दुःखों के इलावा कुछ है हि नहीं वो हमें सुख कैसे दे सकता है। जितने सुख साधन हमें ज्यादा मिल रहें हैं, उतने ही हम परमात्मा से दूर होते जा रहें हैं। यही कारण है कि हमारे पास सब सुखों के साधन होते हुए भी हम सुखीं नहीं हैं बलकि दुःखी है कहा गया है कि

असारे संसारे विषय विष संघा कुल धिया। क्षणार्थम् क्षेमार्थम् पिबत् सुक गाथा अतुल सुधा॥

अर्थात ः इस असार भरे संसार में विषय रुपी ज़हर भरा पड़ा हैं केवल उस परमात्मा का नाम ही हमारा उद्धार कर सकता है। परमात्मा के मिलन के कई रास्ते है पर जो उत्तम रास्ता शास्त्रों ने बताया है वो है मन्त्रजाप। मन्त्रों में से गायत्री मन्त्र वेदों की ऐसी शक्ति है जो सभी कार्यो को करने में साम्मर्थ रखती है। यज्ञवल्क्य जी कहते हैं कि

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी । गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम्॥

अर्थात ः गायत्री वेद की जननी है और तीनों लोकों को पवित्र करने वाली है। गायत्री मन्त्र सबसे ज्यादा शक्ति वर्धक है। गायत्री मन्त्र के पीछे छोटी सी कथा है वो जानकर, हम मन्त्र का उच्चारण सीखेंगे।

एक समय की बात है कि एक व्यकित ने कोई सिद्धि प्राप्त करनी चाही पण्डित जी ने कहा कि गायत्री मन्त्र का जाप एक पुरुष चरण (पाँच लाख) करने से तुझे ये सिद्धि प्राप्त हो जाएगी। उसने इससे भी ज्यादा कर दिया पर सिद्धि प्राप्त नहीं हुई फिर वो पण्डित जी के पास पहुचाँ और सारी बात बताई। पण्डित जी ने गायत्री के बारे में समझाने की कोशिश की पर नहीं समझा तब पण्डित जी ने कहा तूँ ऐसा कर भैरों बाबा की तपस्या कर 21 दिनों में बाबाजी प्रसन्न हो जाएगें, बताये अनुसार किया भैरों बाबा प्रकट हुए कहने लगे कि भक्त बोल कया चाहिए वो भक्त इधर उधर देख रहा था कि बाबाजी कहाँ है पर वो दिखाई नहीं दे रहे थे फिर आवाज़ आई बोल बेटा अपनी इच्छा प्रकट कर फिर भक्त इधर उधर देख रहा है अंत में कहने लगा कि बाबा जी पहले दर्शन दो तब माँगूगा। बाबा ने कहा कि हे दिव्य प्राणी, तेरे माथे के उपर गायत्री मन्त्र का इतना तेज है कि मैं तेरे सामने नहीं आ सकता, क्योंकि मैं भस्म हो जाऊगाँ तूँ ऐसे ही माँग ले, तब भक्त की समझ में आया गायत्री मन्त्र की शक्ति क्या है। वो व्यक्ति पण्डित जी के पास पहुचाँ और पुरे विधि विधान से गायत्री मन्त्र का अनुष्ठान करने लगा, अंत में वो सारी आयु सुखमय व्यतीत करके गायत्री रुपी परम ब्रह्म में लीन हुआ अर्थात मोक्ष को प्राप्त हुआ।

गायत्री मन्त्र ऋग्वेद में एक स्थान पर यजुर्वेद में चार स्थानों पर और सामवेद में एक स्थान पर है। तीनों वेदों में इस मन्त्र का दो प्रकार का पाठ है ज्यादा पाठ पहले वाले का है।

1. *तत्सवितुरवरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥* (ऋ०३-६२-१०। य० ३-३५ /२२-९/३०-२। सा० १४६२)
   Tat Savitur Varenyam Bhargo Devasya Dheemahi, Dhiya Yo Nah Prachodayat.
2. *भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुरवरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥* (य० ३६-३)
   Om Bhur Bhuvah Swah, Tat Savitur Varenyam Bhargo Devasya Dheemahi,
   Dhiya Yo Nah Prachodayat.

बहुत सारे व्यक्ति वरेण्यम् को वरेणियम् बोलते है यह गल्त है, पर जब आप मानसिक जाप करते है तो बोल सकते है। तत् से लेकर धीमहि तक एक श्वास में एक साथ पाठ करना चाहिए। धीमहि पर विराम करके धियो से प्रचोदयात् तक दूसरे श्वास में एक साथ पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन नियम बनाकर ही जाप करें । अगर आपने माला से जाप शुरु किया, तो माला को पूर्ण करके ही आसन से उठे, हो सके तो घी का दीपक भी जलाएँ, पानी भी साथ में रक्खें, हो सके तो पूर्ण विधि के अनुसार करें। पूर्ण विधि जानने के लिए नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करें।

अर्थ हम उस परम पिता परमात्मा, जो कि तीनों लोकों का स्वामी है, उसी की कृपा से हम उसका ध्यान करते है। जो हमारी बुद्धि को सत् मार्ग की ओर प्रेरित करे, तांकि हम सदैव उस ब्रह्म ज्योति में शुभ कार्य करते हुए लीन हो जाए॥

Meaning: I adore the divine Self who illuminates the three worlds- Physical, Astral and Causal; I offer my prayers to that God who shines like the sun. May He enlighten our intellect.

This mantra is considered to be the greatest mantra of all mantras. Those who recite the mantra with devotion develop a brilliant intellect. This mantra grants health of body and mind, and also success, peace, prosperity and spiritual enlightenment of our intellect.

-- Jai Shree Radha --

Pt. Pramod Sharma (Gaur) Cell: 250.884.0648 www.astrovision.ca